महान संगीतकार रोशन का हिंदी फ़िल्म संगीत में योगदान

Dr. Gaurav Jain

Assistant Prof. Music Vocal, Rajasthan Sangeet Sansthan Jaipur

शोध सार

फ़िल्म संगीत में विशिष्टता पैदा करने के लिए अनेक संगीतकारों ने अपना-अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। जिन संगीतकारों ने फ़िल्म संगीत की मर्यादा और उच्च परम्परा को क़ायम रखा और विकसित किया, उन महान विभूतियों में संगीतकार रोशन का नाम अपनी विशिष्ट महत्ता लिए हुए है। हिंदी फ़िल्म संगीत के स्वर्णयुग कहे जाने वाले 1950 से 70 के कालखण्ड में जिन दिग्गज और गुणी संगीत निर्देशकों ने अपने कला कौशल से अमिट छाप छोड़ी है और सदाबहार संगीत दिया है उनमें यक़ीनन रोशन जी का ज़िक्र लाज़मी है। कभी विशुद्ध शास्त्रीय रागों पर आधारित धुनें ,कहीं भारतीय लोक संगीत का स्पर्श ,क़व्वाली की धुन बनाने में विशेष योग्यता तथा ग़ज़ल ,भजन एवम रोमांटिक गीतों की सुमधुर रचनाएं देने वाले महान संगीतकार रोशन ने हमेशा संख्या से ज़्यादा गुणवत्ता को आगे रखा और स्वाभिमान के साथ फ़िल्म जगत में अपना विशिष्ट मुक़ाम बनाया।

मुख्य शब्द : क़व्वाली ,वाद्यवृंद ,लोकप्रियता,आवाज़ ,अर्धशास्त्रीय

उदेश्य

किसी भी विधा को समृद्ध करने में एक नहीं बल्कि अनेक विभूतियों का योगदान होता है और ऐसा ही हिंदी चित्रपट संगीत के साथ हुआ। रोशन जी जैसे मौलिक ,गुणी और बहुमुखी संगीतकार का व्यक्तित्व और कार्यशैली ,उनके छोटे किंतु गुणवत्तापूर्ण संगीत सफ़र की उपलब्धियां पाठकों के सामने आनी चाहिए।

शोध प्रविधि /पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र लेखन में वर्णनात्मक शोध प्रविधि तथा विषय संबंधित साहित्य का अध्ययन तथा समीक्षा का प्रयोग किया गया है I

प्रारम्भिक जीवन

रोशन लाल नागरथ, जो फ़िल्मी जगत में संगीतकार रोशन के नाम से विख्यात हुए, का जन्म अविभाजित भारत में पंजाब प्रान्त के जिला गुजरांवाला के गाँव जलालपुर भट्टियाँ में एक साधारण परिवार में 14 जुलाई, 1917 को हुआ। बचपन से ही उन्हें संगीत के प्रति गहन लगाव था।

औपचारिक रूप से, उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पंजाब के झटटांवाली कस्बे में हुई, जहाँ वे अपनी आंटी के साथ रहते थे। रोशन को बचपन से ही पढ़ाई में दिलचस्पी कम थी और संगीत में अधिक। स्कूल में नक्शे में लाहौर ढूँढ़ना उनके लिए टेढ़ी खीर था, पर हारमोनियम पर उंगली चलाने का बचपन से ही शौक़ था। पाँचवीं कक्षा में पंजाब छोड़कर वे अपने पिता के पास शाहजहाँपुर आ गये। यहीं से उनकी संगीत-यात्रा शुरू होती है। उस समय एक प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक मनहर बर्वे अपना कार्यक्रम देने शाहजहाँपुर आए और तब रोशन को संगीत की दुनिया में प्रवेश करने का मौका मिला। रोशन ने यह कार्यक्रम देखा और जैसे ही यह ख़त्म हुआ, वह बर्वे के पास पहुँचे। तब उन्होंने जैसा गाया था, उसी की जितनी अच्छी नकल कर सकते थे, करके दिखाई। हो सकता है कि बर्वे को यह सब पसन्द आया होगा, क्योंकि इसके बाद बर्वे ने रोशन के पिता से अनुमति चाही कि वो इस छोटे लड़के को अपना शिष्य बना लें और अपने साथ संगीत कार्यक्रमों में ले जाएँ। रोशन लगभग 9 वर्ष के थे जब वे संगीतकार बर्वे के साथ

निकल पड़े और पेशावर, लाहौर ,दिल्ली रावलपिंडी,कलकत्ता जैसे शहरों में संगीत यात्राएं की। कुछ दिनों बाद उनके पिता उन्हें लखनऊ के मशहूर हिन्दुस्तानी संगीत के मैरिस कालेज में दाखिल करा आए। उस समय डॉ० श्रीकृष्ण रातांजनकर वहाँ के प्राचार्य थे। उन्होंने रोशन को प्रवेश दे दिया। यहीं से रोशन की क्रमबद्ध संगीत शिक्षा प्रारम्भ हुई।

महाविद्यालय में पाँच वर्षों का कोर्स था, लेकिन रोशन ने चार साल के बाद यह केन्द्र छोड़ दिया और मध्य भारत में मैहर रियासत (जो अब जिला सतना की तहसील है) में आ पहुँचे ताकि सुप्रसिद्ध सरोदवादक अली अकबर ख़ाँ के पिता सुविख्यात अलाउद्दीन ख़ाँ के शिष्य बनकर संगीत सीख सकें। ऐसे प्रतिभा सम्पन्न गुरु की कृपा और विधिवत संगीत शिक्षा के प्रभाववश शास्त्रीय संगीत में उनकी गहरी रुचि थी। यही कारण है कि उनकी फ़िल्मों के गीतों की सुगम धुनों में भी शास्त्रीय संगीत का मधुर अनुशासन बना रहा। 1
उस्ताद अलाउद्दीन ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और उन्हें सारंगी सिखाना शुरू किया। यह सारंगी उनके फ़िल्मी सफर में क़दम क़दम पर झलकती है। सारंगी का रोशन जितना व्यापक इस्तेमाल शायद ही किसी और संगीतकार ने किया।
मैहर में हैज़ा फैलने पर रोशन वापस दिल्ली पहुँचे जहाँ उनके भाई ने उन्हें एक स्कूल में दाखिल करा दिया। इसी स्कूल में मुकेश भी पढ़ते थे और स्कूल के मंच पर जब मुकेश गाते थे तो रोशन हारमोनियम पर उनका साथ देते थे। यह दोस्ती फ़िल्मों में भी अंत तक क़ायम रही। रोशन दिलरुबा बहुत अच्छा बजाते थे और उनका दिलरुबा सुनकर ही ज़ेड.ए. बुखारी ने ऑल इंडिया रेडियो में रुपये 70/- वेतन पर उन्हें वादक की नौकरी दी, जहाँ रोशन ने 12 वर्ष बिताए।

फ़िल्मी संगीत जगत में प्रवेश

अपितु, आकाशवाणी की सेवा में रत होना रोशन के लिए कई प्रकार से वरदान सिद्ध हुआ। यहाँ एक बंगाली गायिका (इरा) से उनका सम्पर्क हुआ जो बाद में उनके जीवन-सम्बन्ध में परिणित हो गया। ईरा आकाशवाणी से गाती थीं और रोशन दिलरुबा पर संगत करते थे। इसी सम्पर्क ने दोनों के जीवन को आपस में जोड़ दिया और इसका एक प्रभाव यह हुआ कि आगे चलकर उनकी शैली पर बंगाली संगीत की निश्चित छाप पड़ी। इसी अवधि में उनका अनिल विश्वास से सम्पर्क हुआ जो उस समय फ़िल्म जगत में प्रतिष्ठित संगीतकार थे। वे रोशन की कार्यकुशलता से प्रभावित हुए थे और उन्होंने रोशन को अपना सहायक बनाने की इच्छा व्यक्त की थी। अनिल विश्वास के यह शब्द रोशन के लिए देववाणी सिद्ध हुए और उनसे प्रोत्साहित होकर कुछ समय बाद उन्होंने आकाशवाणी की सेवा छोड़कर बम्बई में अपना भाग्य आज़माने का निश्चय किया।
फ़िल्मी दुनिया में उनके निर्माता- निर्देशक केदार शर्मा से अच्छे सम्बन्ध थे। उन्होंने रोशन की संगीत प्रतिभा को पहचाना था। ओरियंटल पिक्चर्स की केदार शर्मा द्वारा निर्देशित फ़िल्म 'नेकी और बदी' (1949) में रोशन ने सर्वप्रथम संगीत दिया। लेकिन ये फ़िल्म नहीं चली। उन्होंने एक और फ़िल्म बनाई जिसमें रोशन को संगीत देने का अवसर दिया। ठीक एक साल बाद जब 1950 में ओरियंटल पिक्चर्स की केदार शर्मा द्वारा निर्देशित फ़िल्म 'बावरे नैन' प्रदर्शित हुई, जिसमें रोशन का संगीत था, तो इसके संगीत ने धूम मचा दी। केदार शर्मा का लिखित एक गीत रोशन के संगीत से सजकर यादगार बनकर रह गया। मुकेश की आवाज़ में स्वरबद्ध "तेरी दुनिया में दिल लगता नहीं वापस बुलाले" और गीता राय के साथ गाया हुआ "ख्यालों में किसी के इस तरह आया नहीं करते" जैसे गीत आज भी कर्णप्रिय और मधुर लगते हैं। इस फ़िल्म ने रोशन का मुकद्दर रोशन कर दिया और उन्हें फ़िर पीछे मुड़कर देखने की स्थिति नहीं आई।
वैसे तो रोशन ने हमेशा ही स्तरीय काम किया फ़िर भी उनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण फ़िल्मों की चर्चा करना आवश्यक है।
बरसात की रात (1960)
यह फ़िल्म बहुत सफल हुई और इसकी सफलता ने रोशन को समकालीन संगीतकारों की अग्रणी पंक्ति में लाकर रख दिया। फ़िल्म की क़व्वाली "न तो कारवां की तलाश है, न तो हमसफ़र की तलाश है" की लोकप्रियता ने फ़िल्मी जगत में तहलका मचा दिया। फ़िल्म जगत में बाद में आने वाले अनगिनत रचनाकारों ने किसी न किसी रूप में इस क़व्वाली का अनुसरण किया है। स्वस्थ परम्परा विकसित हुई और रोशन को "कव्वाली सम्राट" की उपाधि प्राप्त हुई। मधुबाला के भौतिक सौन्दर्य को भारत भूषण द्वारा परदे पर गाये गीत "ज़िंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात" ने अमर बना दिया। गीत राग यमन कल्याण पर आधारित है। नायिका की विशेषताओं को उजागर करती ग़ज़ल 'मैंने शायद तुम्हें पहले भी कहीं देखा है' की

धुन बाहुत कम वाद्यों के प्रयोग के बावजूद एक प्रकार की मिठास व आकर्षण लिए हुए है। सुमन कल्याणपुर व कमल बारोट की मधुर आवाज़ों में पूर्णतया शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत "गरजत बरसत सावन आयो रे" संभवतः छायानट पर आधारित है। यदा कदा कामोद का चलन भी झलकता है। शास्त्रीय संगीत फ़िल्मों में पहुँचकर ऐसे ही गीतों की लोकप्रियता के कारण आज सर्वग्राहय बन गया है। हिट होने वाले गीतों में लोकसंगीत पर आधारित एक अन्य रचना "मुझे मिल गया बहाना तेरी दीद का" (लता) है। इस प्रकार पूरी फ़िल्म ही हिट गीत की श्रृंखला थी।

आरती (1962)

रोशन के अनेक चाहने वाले राजश्री फ़िल्म की इस प्रथम देन को इसका सर्वश्रेष्ठ योगदान मानते हैं। मीना कुमारी—प्रदीप कुमार की जोड़ी के लिए और मजरूह सुल्तानपुरी के बोलों को रोशन ने उत्तम धुनें दी। अब क्या मिसाल दूँ मैं तुम्हारे शबाब को (रफ़ी) बेहद लोकप्रिय हुआ और यह रफी के पसंदीदा गीतों में से एक था।शास्त्रीय व लोकसंगीत के अद्भुत समन्वय से सजा एक अन्य गीत था। "बार बार तोहे क्या समझाये, पायल की झंकार" (लता रफी) एक अन्य युगल गीत "आपने याद दिलाया तो मुझे याद आया" (लता रफ़ी) तथा "कभी तो मिलोगी कहीं तो मिलेगी" (लता) इस फ़िल्म की सदाबहार रचनाएँ हैं।

दिल ही तो है (1963)

राजकपूर व नूतन के संगीतमयी प्रेम से ओत प्रोत इस फ़िल्म में रोशन के योगदान को सर्वोत्तम सफलता मिली। साहिर लुधियानवी द्वारा रचित लगभग एक दर्ज़न गीतों से भरपूर इस फ़िल्म की हर ध्वनि लोकसंगीत का अंग बन चुकी है। "तुम अगर मुझको न चाहो तो कोई बात नहीं" और "भूले से मोहब्बत कर बैठा नादां था बेचारा दिल ही तो है" दो ऐसे गीत बने जिन्होंने मुकेश को अपनी ख्याति की पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया। क़व्वाली "निगाहें मिलाने को जी चाहता है" (आशा व साथी) वाकई एक उत्कृष्ट प्रस्तुति रही।,अगर कोई इस फ़िल्म में से कोई ऐसा गीत चुने जिसने धूम मचाने में सभी कीर्तिमान तोड़े तो वह होगा "लागा चुनरी में दाग छुपाऊँ कैसे" (मन्नाडे)। इस अर्द्धशास्त्रीय संगीतमयी गीत को यदि परम्परा-निर्धारक बताया जाये तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

ताजमहल (1963)

ताजमहल' ऐसी फ़िल्म थी जिसमें साहिर लुधियानवी के बोलों, बीना राय व प्रदीप कुमार की जोड़ी, तथा लता व रफी के युगल गान "जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा" के माध्यम से रोशन को चिरस्थायी लोकप्रियता के जगत में रख दिया। "जो बात तुझमें है तेरी तस्वीर में नहीं" (रफी) या "पाँव छू लेने दो फूलों को इनायत होगी" (रफी-लता) तो सभी कीर्तिमानों से आगे निकल गये। फ़िल्म की क़व्वाली "चाँदी का बदन, सोने की नज़र" (आशा, मन्नाडे, महेन्द्र कपूर, साथी) ने लोकप्रियता की धूम मचा दी।ग़ज़ल "जुर्मे उल्फ़त पे हमें लोग सज़ा देते हैं" (लता) इस फ़िल्म को तराशी हुई बेहतरीन संगीत रचना है।

चित्रलेखा (1964)

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बनी इस फ़िल्म के लिये रोशन ने पूर्णतया शास्त्रीय संगीत पर आधारित धुनें बनायीं जो बेहद लोकप्रिय हुई। साहिर के बोलों को सुसज्जित वाद्यवृन्द से मिलाकर रोशन ने ऐसा सांगीतिक वातावरण तैयार किया कि पूरी फ़िल्म ही संगीतमय मालूम होती है। राग कलावती पर आधारित "काहे तरसाये जियरा" (ऊषा, आशा) राग यमन पर आधारित "मन रे तू काहे न धीर धरे", राग कामोद पर आधारित "ऐ री जाने न दूँगी" जैसे गीत शास्त्रीय संगीत के प्रति संगीतकार के विशेष लगाव को प्रदर्शित करते हैं। एक अन्य युगल गीत "छा गये बादल नीलगगन पर धुल गया कजरा साँझ ढले" (रफी-आशा) उनकी बनायी बेहतरीन धुनों में से एक है। साहिर कृत "मन रे तू काहे न धीर धरे" तथा "संसार से भागे फ़िरते हो" जैसी आध्यात्मिक विषय वाली रचनाओं को भी रोशन ने अपना संगीत देकर अमर बना दिया।

भीगी रात (1965)

"दिल जो न कह सका वही राज़े दिल कहने की रात आई", ऐसा कोई संगीत प्रेमी न होगा जो इस फ़िल्म में मजरूह सुल्तानपुरी के बोलों और रफ़ी व लता के युगल गानों से उत्प्रेरित न हुआ हो।

देवर (1966)

मुकेश के गाये गीत गुज़रा ज़माना बचपन का" और "बहारों ने मेरा चमन लूटकर" मुकेश के योगदान में मील के स्तंभों के समान है। इस फ़िल्म में गीतकार आनन्द बख्शी ने रोशन के साथ पहली बार काम किया। लता की आवाज़ में स्वरबद्ध "दुनिया में ऐसा कहाँ सबका नसीब है" और " रूठे सैंया हमारे सैंया क्यूँ रूठे" सदाबहार रचनाएँ हैं।

ममता (1966)

"रहते थे कभी जिनके दिल में हम जान से भी प्यारों की तरह"। इसे भी रोशन की प्रमुख धुनों में स्थान मिलना चाहिए। इस फ़िल्म में लता द्वारा गायी यह ग़ज़ल उनकी विशेष रचनाओं में से एक विशिष्ट योगदान के मुखरन का परिचायक है। मजरूह द्वारा रचित तथा लता द्वारा गाया एक अन्य गीत "रहे न रहें हम महका करेंगे बनके सबा" रोशन की रचनाओं में सर्वाधिक गुणवत्ता से युक्त हैं और लता जी को विशेष समर्पण के रूप में लगभग हर स्टेज कार्यक्रम में गाया जाता है। राग यमन पर आधारित हेमन्त कुमार व लता का गीत "छुपा लो यूँ दिल में प्यार मेरा" सबसे मार्मिक युगल गीतों में शामिल है।

बहू बेगम (1967)

रोशन के संगीत निर्देशन की तराशी हुई रचनाओं की एक झलक इस फ़िल्म के गीतों में भी देखने को मिलती है। "हम इंतज़ार करेंगे तेरा क़यामत तक' अत्यंत लोकप्रिय रचना थी ,'निकले थे कहाँ जाने के लिये" (आशा) फ़िल्म का यह मुजरा अपनी अलग शैली का प्रतीक बना। इसी परिदृश्य के दूसरे छोर पर लता का गाया गीत "दुनिया करे सवाल तो हम क्या जवाब दें" बहुत लोकप्रिय हुआ।

अनोखी रात (1968)

यह रोशन की अन्तिम फ़िल्म थी जिसे उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी (इरा) ने पूरा किया। लोकसंगीत का बेहतरीन उदाहरण "ओ रे ताल मिले नदी के जल में" तथा "दुल्हन से तुम्हारा मिलन होगा" मुकेश व रोशन के संयोग से निर्मित्त विस्मयकारी रचनायें थीं और यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि मुकेश ने रोशन के अन्तिम गौतों को अपनी आवाज से अमर बना दिया। आशा द्वारा गाया गीत "ना ना मेरी बेरी के बेर मत तोड़ो" हिन्दी चित्रपट का पहला यौवनी गीत था जिसे आज के दौर के इस प्रकार की श्रृंखला के गीतों का गर्वपूर्ण पूर्ववती कहा जा सकता है। किन्तु 'अनोखी रात' ऐसी फ़िल्म है जिसका हिन्दी फ़िल्मी गीतों के ऐतिहासिक मूल्यांकन में अपना ही स्थान है जिसमें लता ने बिदाई के अवसर वाला यह बेजोड़ गीत गाया "महलों का राजा मिला कि रानी बेटी राज करेगी"। क्या इस धरती पर कोई ऐसा पिता होगा जो रोशन के इस विदाई गीत का श्रवण करके रो न पड़े।

16 नवम्बर 1967 का वह क्रूर दिन आया जब लोकप्रिय संगीतकार रोशन अचानक इस भौतिक संसार को छोड़ गए। वह संगीतकार जिसने अपनी मधुर व मोहक धुनों से करीब 20 वर्षों तक संगीत प्रेमियों को मोहित किया, उसकी जीवन वीणा सदा के लिए मौन हो गई।

निष्कर्ष

लगभग 19 वर्षों के अपने फ़िल्मी जीवन मे रोशन ने 54 फ़िल्मों में संगीत दिया। एक छोटे से कार्यकाल में उन्होंने हिंदी सिने संगीत सुनने वालों को एक से बढ़कर एक दिलकश ,मधुर, प्रभावशाली और सर्वग्राह्य धुनों की सौग़ात दी। जब भी भारतीय चित्रपट संगीत का इतिहास लिखा जाएगा तो इस महान संगीतकार का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा।

सन्दर्भ

1 डॉ० हरिशचन्द्र पाठक, 'मेला सात सुरों का', माधुरी, 29.10.82, पृ० 39.

2 'बीहायन्ड दी स्क्रीन', फ़िल्मफेयर, 10 अगस्त 1962, पृ० 34.

3 डॉ० प्रकाश कामत 'कहाँ हो तुम जरा आवाज दो', सकाल (मराठी), 16.11.91.

4 लक्ष्मीकान्त-प्यारेलाल, 'ऑफ म्यूजिक मर्थ एंड मॉरलस', फ्री प्रेस जरनल, बाम्बे, 5 नवम्बर, 1964 १० 6.

5 लीप पदगाँवकर, 'ओइ दू ए नाइटिंगेल', सेमीनार, न्यू देहली, मार्च 1995, पृ०23.

6 फ़िल्म संगीत, हाथरस, जनवरी, 1961, पु० 11.

7 "Here is a composer who has not grown simply great, but grown great simply." राजू भारतन, 'विदर ऑवर म्यूजिक डायरेक्टर्स', फ़िल्मफेयर, 19 अक्टूबर 1962, पु० 15.

8 राजू भारतन, 'विदर ऑवर म्यूजिक डायरेक्टर्स', फ़िल्मफेयर, 19 अक्टूबर 1962, पृ० 15.

9 व्यास, 'फ़िल्म और शास्त्रीय संगीत', संगीत, हाथरस, जून 1967, पृ० 27.

10 अमर चतुर्वेदी, 'हिन्दी फ़िल्मों में लोकसंगीत', संगीत, हाथरस, अगस्त 1967, पु० 17.

11 देवदास कुसुम, 'भारतीय फ़िल्म संगीत का इतिहास', संगीत, हाथरस, दिसम्बर, 1963.